अंक - 29 । जनवरी - जून 2014

CIRG 1979 MATHURA

अजामुख

भाकृअनुप ICAR

केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान समाचार पत्र

www.cirg.res.in

सीधा संवाद...

भारत में बकरियों की कुल 25 वर्गीकृत नस्लें हैं जो भारत की कुल 25 प्रतिशत बकरियों का प्रतिनिधित्व करती हैं। इसका अर्थ कि अधिकतर बकरियाँ या तो वर्गीकृत नहीं की गई हैं या वह अवर्गीकृत किस्म की है। प्रत्यक्ष रूप से यह दोनों ही बातें सही हैं। अवर्गीकृत बकरियों की उत्पादन क्षमता उन्नत नस्ल की बकरी प्रजातियाँ जैसे जमुनापारी, बीटल, उस्मानावादी की तुलना में काफी कम है। अवर्गीकृत बकरियों में वृद्धि का मूल कारण देश में पशु प्रजनन की स्पष्ट नीति का अभाव और अच्छे नस्ल के नरों की कमी है। देखने में आया है कि ग्रामीण क्षेत्रों में अल्पायु में ही नरों को अच्छा मूल्य मिलने के कारण या तो बेच दिया जाता है या खस्सी कर दिया जाता है जिससे अच्छे प्रजनक बकरों की कमी हो जाती है और किसानों के द्वारा उपलब्ध किसी भी प्रकार के बकरों से प्रजनन कराने से अवर्गीकृत बकरियों की संख्या बढ़ती है। ऐसी भी आम धारणा है कि अवर्गीकृत बकरियों में स्वास्थ्य समस्याऐं नस्ली बकरियों की अपेक्षा कम होती हैं। वास्तविकता में यह तथ्य असत्य और भ्रामक है।

केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान द्वारा भी कुछ उन्नत नस्ल के बकरे जिनमें खासतौर से बरबरी, जमुनापारी, जखराना एवं सिरोही प्रजातियाँ शामिल हैं ग्रामीण क्षेत्रों में उपलब्ध कराए गए हैं और उनका उपयोग कर बकरी प्रजाति संरक्षण को सुनिश्चित करने की कोशिश की गई है। लेकिन दुखद विषय है कि कई जगहों पर सरकारी बकरों के रखरखाव की दिक्कतें देखी गई हैं। प्रबन्धन पर आये खर्च के कारण या तो गाँव का कोई व्यक्ति उन्हें रखना नहीं चाहता है या फिर वह प्रजनन के लिए दी गई सेवा की फीस के रूप में पैसा लेने लगता है जिससे नर की उपलब्धता किसानों की बकरियों के लिए बाधित होती है। ऐसा करने से एक सफल नस्ल सुधार का अभियान भी बाधित होता है।

अच्छे नस्ली नरों की पर्याप्त संख्या को सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है कि ग्रामीण क्षेत्रों में उपलब्ध दोगुले नरों को खस्सी किया जाए और नस्ली बकरों की संख्या में पर्याप्त रूप से बढ़ाई जाए। बध करने के लिए नरों की एक आयु निर्धारित की जाए जिससे अल्पायु में ही नर वध को रोका जा सके। इसके साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों में किसानों को बकरी पालन में नस्लीय बकरियों के महत्व को समझना होगा और प्रजनन उपयुक्त बकरों की (संख्या) उपलब्धता सुनिश्चित करने के बाद ही अतिरिक्त बकरों को वध के लिए भेजा जाए। कृत्रिम गर्भाधान भी समस्या का दूसरा हल है जिसके लिए आवश्यक है कि अच्छे नस्लीय बकरों के वीर्य को संचित कर हिमीकृत विधि द्वारा संरक्षित किया जाए और पर्याप्त मात्रा में आवश्यकता पड़ने पर किसानों को उपलब्ध कराया जाए। यद्यपि इस दिशा में प्रारम्भिक तकनीकी समस्याऐं हैं तथापि आगामी वर्षो में इस बात की आशा है कि हिमीकृत वीर्य का उपयोग कर बकरी कृत्रिम गर्भाधान तकनीकी का केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा मानकीकरण सफल होगा जिससे न सिर्फ हम अच्छे नरों का अधिकाधिक प्रयोग कर उत्तम प्रकार के पशु प्राप्त कर सकेंगे बल्कि नस्ल संरक्षण के कार्य को भी सुनिश्चित कर सकेंगे।

एस.के. अग्रवाल
निदेशक

संपादक मंडल : अध्यक्ष- दिनेश कुमार शर्मा, **सदस्य**- भुवनेश्वर राय, विवेक गुप्ता, रविन्द्र कुमार, हरिऔध तिवारी, **टंकण**- जगदीश चन्द्र, **छायांकन**- सतीश चन्द्रा

बकरियों हेतु समायोज्य स्लेटेड फर्श

वर्तमान में व्यवसायिक बकरी पालन के अन्तर्गत सघन एवं अर्धसघन पद्धतियों को धीरे–धीरे अपनाया जा रहा है। बकरियों के बाड़ों की आन्तरिक संरचना विभिन्न कारणों से परिवर्तित की जाती है जैसे कि बकरियों की संख्या, बकरी पालकों की आर्थिक एवं सामाजिक स्थित, जलवायु इत्यादि। सभी प्रकार के बाड़ों में मिट्टी या कच्चे फर्श के बाड़े बकरियों हेतु ज्यादा आरामदेह एवं कम खर्च वाले होते हैं। अत: इस प्रकार के फर्श हेतु बकरी पालकों को सलाह दी जाती है।

बकरियों हेतु स्लेटेड या उठे हुये फर्श बाँस, लकड़ी, या छेद युक्त प्लास्टिक के बनाये जा सकते हैं। इस प्रकार के फर्श का निर्माण अधिक आर्द्रता वाली जगहों पर करने के लिये बकरी पालकों को बताया जाता है। परन्तु अभी तक इस प्रकार के बाड़ों एवं फर्श का शुष्क एवं गर्म जलवायु में बकरियों की उत्पादन क्षमता पर होने वाले प्रभाव का अध्ययन नहीं किया गया है। साथ की साथ जलवायु परिवर्तन के कारण होने वाली अत्यधिक गर्मी एवं ठंड बकरी पालन को प्रभावित कर रही है अत: बकरी उत्पादन में होने वाली कमी को घटाने हेतु वैकल्पिक एवं सक्षम आवास प्रणाली की अत्यधिक आवश्यकता है।

स्लेटेड फर्श हेतु सामान्यत: पाँच फीट की ऊँचाई की सलाह

दी जाती है। परन्तु इसकी ऊँचाई विभिन्न मौसम में उत्पादन प्रणाली के आधार पर परिवर्तित करने से लाभ प्राप्त किया जा सकता है । इसके लिए समायोज्य स्लेटेड फर्श का निर्माण करने में विभिन्न मौसमों में जैसे कि गर्मी, बरसात एवं ठंड में कम ज्यादा की जा सकती है। अभी तक इस प्रकार की व्यवस्था का अध्ययन बकरी पालन के लिए नहीं किया गया है। इस हेतु 15'x 20' आकार के एक समायोज्य स्लेटेड फर्श का निर्माण मिराण्डी लकड़ी की पट्टियों (2" चौड़ी एवं 1" मोटी) से कराया गया। इन पद्धतियों के बीच की दूरी 1x5 से0 मी0 रखी गई। इस फर्श का निर्माण इस प्रकार कराया गया ताकि इसकी ऊँचाई नट वोल्ट की सहायता से 1.25 फीट, 2.5 फीट, 3.75 फीट एवं 5 फीट पर रखी जा सके। इस प्रकार के निर्माण से विभिन्न ऊँचाई के फर्श पर मेंमनों की वृद्धि दर एवं दुधारू बकरियों की उत्पादन क्षमता पर होने वाले प्रभाव का अध्ययन किया जा सकेगा। अन्य प्रकार के विषयों जैसे कि बकरियों में अन्त:परजीवियों की समस्या, बकरी पालन में मजदूरी पर होने वाला खर्च, बाड़ों के अन्दर का मौसम एवं बकरियों के स्वास्थ्य का अध्ययन करने के उपरान्त बकरी पालकों को गर्म शुष्क जलवायु में समायोज्य स्लेटेड फर्श से संबन्धित उचित सलाह दी जा सकेगी।

शिव प्रताप सिंह, एन. रामचन्द्रन

बरबरी बकरी द्वारा चार मेमनों का जन्म

02 मई 2014 को पोषण, चारा स्रोत एवं उत्पाद प्रौद्योगिकी विभाग के प्रयोगात्मक प्रक्षेत्र पर बाबरी बकरी ने चार मेमनों को जन्म दिया। यह इस बकरी की तीसरी ब्यांत थी तथा बकरी की उम्र 3.5 वर्ष थी। चार बच्चों में तीन नर (जन्म भार 1.75, 1.4, 0.9 कि.ग्रा.) तथा एक मादा (जन्म भार 1.2 कि.ग्रा.) थे। जन्म के उपरान्त चारों बच्चे तथा माँ स्वस्थ तथा क्रियाशील थे। – ***रवीन्द्र कुमार***

राष्ट्रीय व्यवसायिक बकरी पालन प्रशिक्षण कार्यक्रम की बढ़ती लोकप्रियता

प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रशिक्षणार्थियों को लाभ अर्जन के अतिरिक्त उनके व्यवसाय के प्रति सकारात्मक रूझान पैदा करता है। बकरी व्यवसाय से जुड़े उद्यमियों में वैज्ञानिक बकरी पालन जानकारी का अभाव सबसे बड़ी बाधा है। केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मखदूम, मथुरा व्यवसायिक बकरी पालकों हेतु वर्ष में चार बार (प्रत्येक तिमाही में एक) 10 दिवसीय राष्ट्रीय प्रशिक्षण का आयोजन करता है। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रशिक्षणार्थियों की आवश्यकता के अनुरूप बनाया गया है। कार्यक्रम मुख्यत: प्रजनन, पोषण, स्वास्थ्य, आवास, जनन, मूल्य संवर्द्धन, तकनीकी आर्थिकी, व्यापार सहायता एवं विपणन पर केन्द्रित होता है।

इस कार्यक्रम के समापन के उपरान्त प्रशिक्षणार्थी व्यवसायिक स्तर पर बकरी फार्म खोलने हेतु पहल करते हैं। इसी क्रम में राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने वाले 1121 प्रशिक्षणार्थियों से जो आंकड़े उनकी उम्र, शिक्षा, व्यवसायिक स्तर, सामाजिक समूह, उनके गृह राज्य के सम्बन्ध में संकलित किये गए उनके विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि प्रशिक्षणार्थियों की संख्या 62 से 266, 2006-07 एवं 2011-12 के मध्य बढ़ी है। प्रशिक्षणार्थियों की राज्यवार भागीदारी यह दर्शाती है कि कुल 22 राज्यों में अधिकतम प्रशिक्षणार्थी उत्तरी राज्यों से (60 प्रतिशत) जिसमें उत्तर प्रदेश से 42 प्रतिशत, हरियाणा से 12 प्रतिशत, दिल्ली से 5 प्रतिशत एवं पंजाब से 2 प्रतिशत थे। इसका सम्भावित कारण यह है कि ये राज्य केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान के पास में हैं इसके बाद मध्य एवं पश्चिमी राज्यों से लगभग 20 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थी थे। जिसमें मध्य प्रदेश से 9 प्रतिशत, छत्तीसगढ़ से 3 प्रतिशत एवं महाराष्ट्र से 2.5 प्रतिशत सम्मिलित हैं। इसी क्रम में 13 प्रतिशत पूर्वी राज्यों के प्रशिक्षणार्थियों ने राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। जिसमें बिहार राज्य से 7, पश्चिम बंगाल से 3 एवं झारखण्ड से 2 प्रतिशत सम्मिलित हैं। व्यवसायिक बकरी पालकों की भागीदारी का यह रूझान दर्शाता है कि व्यवसायिक बकरी पालन पर राष्ट्रीय प्रशिक्षण

कार्यक्रम ने अपनी लोकप्रियता सम्पूर्ण भारत में हासिल की है। इसके अतिरिक्त इन प्रशिक्षण कार्यक्रम में मुख्यत: 30 से 40 वर्ष आयु वर्ग के 72 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थियों की भागीदारी यह दर्शाती है कि अधिकतम प्रशिक्षणार्थी युवा वर्ग के थे। साथ ही साथ प्रशिक्षणार्थियों का शैक्षिणक स्तर यह दर्शाता है कि कुल प्रशिक्षणार्थियों में से 46 प्रतिशत स्नातक एवं स्नातकोत्तर एवं 7 प्रतिशत तकनीकी रूप से विभिन्न क्षेत्रों से शिक्षित थे। प्रशिक्षणार्थियों का व्यवसायिक स्तर यह दर्शाता है कि 54 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थी खेती एवं अन्य पशुपालन व्यवसाय में थे। उसके बाद 21 प्रतिशत व्यापार एवं 15 प्रतिशत विभिन्न सेवाओं में संलग्न थे और मात्र 3 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थी ही बेरोजगार थे। प्रशिक्षणार्थियों का वितरण उनके सामाजिक समूह के अनुसार यह दर्शाता है कि लगभग 50 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थी सामान्य वर्ग से थे जो यह दर्शाता है कि व्यवसायिक बकरी पालन किसी विशेष सामाजिक वर्ग से जुड़ा हुआ नहीं है। उपर्युक्त दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए यह आवश्यक है कि एक बड़े स्तर पर बकरी पालकों एवं इस व्यवसाय से जुड़े अन्य लोगों को प्रशिक्षण प्रदान करने हेतु मूलभूत ढ़ाँचे को मजबूत किया जाए।

ए.के. दीक्षित, बृजमोहन, खुश्याल सिंह, विजय कुमार, यू.सी. यादव एवं एस.सी. एल. गौतम

प्रशिक्षणार्थियों की बढ़ती भागीदारी

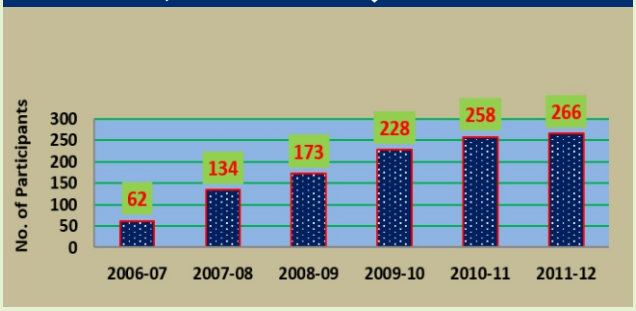

प्रशिक्षणार्थियों की राज्यवार भागीदारी

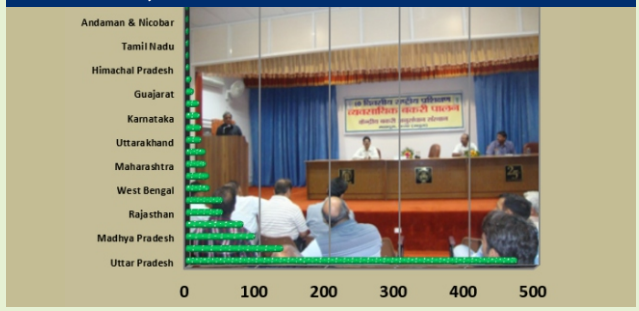

बकरी पालन हेतु सरकारी योजनाऐं

बकरी भारतवर्ष की बहुत बड़ी जनसंख्या की जीविका का महत्वपूर्ण आधार है। बकरी पालक किसानों की मदद हेतु भारत सरकार की कई योजनाऐं हैं उनमें से कुछ योजनाऐं निम्नवत हैं। चालू वित वर्ष हेतु कुछ योजनाओं हेतु सरकार की संस्तुति की आवश्यकता है।

प्रोटीन की प्रतिपूर्ति हेतु राष्ट्रीय योजना (एन.एम.पी.एस.)

यह राष्ट्रीय कृषि विकास योजना (आर.के.वी.वाई.) की उपयोजना है। इस योजना के अन्तर्गत दो प्रमुख कार्यक्रम हैं:-

सघन बकरी पालन को बढ़ावा देना

इस योजना के अन्तर्गत किसान जिनके पास 10 या उससे अधिक बकरियाँ हैं सहायता प्राप्त करने के पात्र होते हैं। इसके अन्तर्गत 95 मादा एवं 5 नर बकरे तक की इकाई की मदद की जा सकती है। इन इकाईयों में लोहे के चारा उपकरण, साइलेज बनाने हेतु गढ़ढा बनवाना, स्वास्थ्य सम्बन्धी पैकेज, विटामिन पूरक लवण की प्रतिपूर्ति हेतु मदद की जाती है।

परम्परागत बकरी उत्पादन को मदद करना।

10 कि.मी. क्षेत्र की परिधि में रहने वाले बकरी पालकों, जिनके पास कुल 2000 बकरियाँ हैं, को इस योजना का लाभ दिया जाता है। बकरी पालकों का नाम पंजीकृत कर लाभार्थी को पशु स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध कराये जाने का प्रावधान है। इस क्रम में ग्रामीण बेरोजगार युवक को प्रशिक्षित किए जाने एवं उन्हें पशुपालन विभाग द्वारा बकरी स्काउट के रूप में अनुबंध के आधार पर नामांकित किए जाने का प्रावधान है। कार्यक्रम के तहत कृमिनाशन, टीकाकरण एवं क्षेत्र विशेष लवण प्रदान करने हेतु प्रावधान है।

पशुधन की लुप्त प्रजातियों का संरक्षण

इस योजना का उद्देश्य इस तरह की नस्ल को संरक्षित करने का है जिनमें पशुओं के गृह क्षेत्र में पशु संख्या 10,000 से भी कम है। इस योजना के अन्तर्गत 100 प्रतिशत अनुदान प्रस्तावित है। इस योजना से जुड़े हुए लोग राज्य कृषि विश्वविद्यालय, अनुसंधान एजेन्सी एवं स्वयं सहायता समूह आदि हो सकते हैं।

केन्द्रीय क्षेत्रीय योजनाऐं

छोटे रूमन्थी पशुओं एवं खरगोश का समेकित विकास (आई.डी.एस.आर.आर.) के अन्तर्गत प्रावधान है कि किसानों के बकरी पालन इकाई की स्थापना हेतु 25 से 33 प्रतिशत तक छूट उपलब्ध कराऐं।

इस अन्तर्गत 40+2 की भेड़ एवं बकरी पालन इकाई की कुल कीमत 1,00,000/-होगी एवं सामान्य वर्ग के उद्यमियों के लिए इसमें 25 प्रतिशत छूट या अधिकतम रू. 25,000/- होगी तथा अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति एवं उत्तर पूर्वी राज्य जिसमें सिक्किम राज्य भी सम्मिलित है के उद्यमियों को 33.33 प्रतिशत की छूट होगी एवं इसकी अधिकतम सीमा रू. 33,300/- है।

500+25 की इकाई - इस परियोजना की कुल कीमत 25 लाख आंकी गयी है एवं सामान्य श्रेणी के उद्यमियों के लिए इसमें अधिकतम छूट रू. 6.25 लाख होगी एवं अनुसूचित जाति/जनजाति पहाड़ी एवं उत्तर पूर्वी राज्य जिसमें सिक्किम शामिल है के उद्यमियों हेतु छूट 33.33 प्रतिशत शामिल होगी जिसकी अधिकतम सीमा रू. 8.33 लाख होगी।

इन योजनाओं के अलावा राज्यों की बकरी से जुड़े हुए लोगों की मदद हेतु अपनी अलग योजनाऐं हैं इच्छुक व्यक्ति अपने खण्ड विकास अधिकारी / बी.डी.ओ., पशु चिकित्सा अधिकारी (बी.ओ.) बैंक अधिकारी, नावार्ड, अधिकारी, कृषि विज्ञान के लोगों आदि से और अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क कर सकते हैं।

विजय कुमार, बृजमोहन, ए.के. दीक्षित, खुश्याल सिंह, यू.सी. यादव एवं एस.सी. गौतम

अजा पोषण

बाद जन्म के मेमना तुरन्त पिलाना खीस
प्रतिरोधी क्षमता बढ़े स्वास्थ्य रहेगा ठीक ।
तीन माह तक सभी का, रखना होगा ध्यान
प्रतिदिन उनको कराऐं, मां के दूध का पान।
दो सप्ताह की आयु पर, दें थोड़ा दला हुआ दाना
शुरूआती बढ़वार को यह है रूचिकर खाना।
दुधारू बकरियों को अतिरिक्त आहार जरूरी
दुग्ध उत्पादन क्षमता बढ़े, वृद्धि होगी पूरी।
प्रजनन हेतु बकरों को पूर्ण उचित आहार
उनकी प्रजनन क्षमता बढ़े, बढ़ेगी पैदावार।
रखरखाव हेतु संतुलित आहार जरूरी
पुष्ट होय बकरिया पोषण आवश्यकतायें पूरी।
हरा चारा, पत्तियाँ, भूसा व पैलेट दाना
इनको पोषण विदों ने उत्तम आहार है माना।
आहार में यदि मिला कर देंगे खनिज लवण
स्वास्थ्य रहे उत्तम, शरीर पर आयेगी चमक।
प्रतिदिन छः घंटे चराई है जरूरी
स्वास्थ्य में वृद्धि होगी, शारीरिक जरूरतें पूरी।

राजकुमार सिंह

त्वचा मियासिस : बकरियों एवं भेड़ों में प्रचलित एक घातक रोग

वर्षाकाल में बकरियों एवं भेड़ों में पाया जाने वाला यह अति प्रचलित रोग है। यह रोग डिपटेरा वर्ग की विभिन्न प्रकार की मक्खियों के डिम्भकों से त्वचा ऊतकों के संक्रमण से पैदा होता है। त्वचा पर बने घाव में डिम्भकों की उपस्थिति से उत्पन्न बेचैनी, भेड़-बकरियों के उत्पादन में कमी, खाल एवं ऊन की गुणवत्ता में गिरावट के रूप में प्रकट होती है आम भाषा में इसे कीड़े वाला घाव भी कहते हैं।

रोग की व्यापकता

मियासिस विश्व के प्रत्येक भू-भाग से उल्लेखित है तथा विभिन्न जलवायु परिस्थितियों में मक्खियों की अलग-अलग प्रजातियाँ इस रोग के लिए उत्तरदायी हैं। आमतौर पर यह रोग भेड़ों में बकरियों की अपेक्षा अधिक देखा गया है। खुली चोट या ऊन कतरने से उत्पन्न घाव, केजियस लिम्फेडिनाइटिस एवं फुट रॉट या खुर गलन की विक्षिप्तियाँ, मल त्याग से उत्पन्न गीलापन, एक्जीमा, सींग का टूटना एवं रूमन फिस्टूला से उत्पन्न घाव प्राथमिक रूप से इस रोग को जन्म देते हैं। यद्यपि सभी नस्ल आयु एवं लिंग के पशु इस रोग से प्रभावित हो सकते हैं तथापि कुछ विशेष भेड़ नस्लें इस रोग के प्रति अतिसंवेदनशील हैं। वर्षाकाल में फैली गंदगी मक्खियों की सक्रियता को जन्म देती है। इसी कारण वर्षा ऋतु में यह रोग व्यापक रूप से भेड़-बकरियों को प्रभावित करता है।

कारक

मक्खियों की विभिन्न प्रजातियाँ इस रोग को जन्म दे सकती हैं। इनमें प्राथमिक रूप से ***मस्का*** एवं ***ल्यूसीलिया, केलीफोरा*** एवं ***फारमिया*** वंश की मक्खियाँ हैं। ये मक्खियाँ ब्लो फ्लाई के नाम से भी जानी जाती हैं। आमतौर पर ये मक्खियाँ पशु शरीर के घावों पर प्राथमिक रूप से आक्रमण करती है। इनके अंड़ों से उत्पन्न डिम्भक घाव में संक्रमण कर अन्य दूसरी मक्खियों के आक्रमण को, विशेष रूप से ***क्राइसोमिया*** और ***सार्कोफेगा*** वंश से सम्बन्ध रखती हैं, आमन्त्रित करती हैं और समस्या की गम्भीरता को बढ़ा देती है। प्राय: देखा गया है कि प्राथमिक मक्खियों के आक्रमण से उत्पन्न घाव परिस्थतियों के बाद ही द्वितीयक मक्खियों आक्रमण कर पाती हैं और रोग को आरम्भ करने में इनकी कोई भूमिका नहीं होती है।

रोग जनन

इस रोग का कारण लम्बी ऊन या पशु के भीग जाने या पेशाव के संक्रमण से उत्पन्न परिस्थतियों तथा ऊन कतरन से उत्पन्न घाव के मक्खियों के आकर्षण से होता है। प्राथमिक मक्खियाँ इन घावों में अंड़े देती हैं अंड़ों से उत्पन्न डिम्भक जो एक से दो दिन के भीतर तैयार हो सकते हैं घाव के स्राव एवं ऊतकों का भक्षण कर तेजी से बढ़ते हैं। डिम्भकों के मुखांग से उत्पन्न कुछ प्रोटियालाइटिक एन्जाइम घाव के ऊतकों को गलाने में मदद करते हैं। इस प्रक्रिया में घाव की गहराई बढ़ जाती है और उत्पन्न स्राव एवं गंध द्वितीयक मक्खियों को आकर्षित करते हैं जो पुन: अपने डिम्भकों के द्वारा रोग की गम्भीरता को बढ़ा देते हैं।

लक्षण

आमतौर पर भेड़-बकरियों के शरीर के विशेष हिस्से इस रोग से प्रभावित होते हैं जिनमें गर्दन, छाती, पीठ, गुदा एवं उसके आसपास का स्थान, मेढ़ों एवं बकरों के सींग के आसपास तथा शिश्न द्वार के आसपास का स्थान इस रोग के लिए अति संवेदनशील हैं। इस रोग से प्रभावित पशु प्राय: बेचैन देखा जाता है। स्थान विशेष के लक्षण भिन्न-भिन्न हैं परन्तु रोगी पशु सामान्यत: चर नहीं पाता और प्रभावित अंग को मुंह या किसी अन्य वस्तु से रगड़ता है। घाव से अति दुर्गन्ध आती है। आमतौर पर ऊन को काट कर देखने पर घाव में विभिन्न अवस्थाओं के डिम्भक दिखाई देते हैं। प्रभावित घाव बड़ा हो जाता है और ऊतकों की क्षति के कारण अति विक्षिप्त दिखाई पड़ता है। अधिक प्रभावित होने पर रोगी पशु में बुखार देखा जा सकता है।

निदान

घाव में उपस्थित डिम्भकों को देखकर रोग का निदान सुनिश्चित किया जाता है। यद्यपि घाव की दुर्गन्ध, पशु की बेचैनी, पूँछ का बार हिलाना तथा अंग विशेष का रगड़ना इस रोग के निदान में सहायक हैं।

नियंत्रण एवं उपचार

मक्खियों का नियंत्रण इस रोग के नियंत्रण के लिए अति आवश्यक है। भेड़ों में लम्बी पूँछ इस रोग को जन्म देने में सहायक है अत: जन्म के तुरन्त बाद उसको काट देना चाहिए। ब्यांता मादा भेड़-बकरी के जननांगों के आसपास एवं पिछले पैरों के बीच की ऊन या बाल काट देने से प्रसव के समय उनके गंदा होने की सम्भावना कम हो जाती हैं। इसी प्रकार दस्त से प्रभावित पशु में बाल या ऊन को काट देने की सलाह दी जाती है। ऊन कतरन से उत्पन्न घावों से पशु को बचाने के लिए विशेष प्रबन्ध किए जाने चाहिए और सालाना किया जाए। डिम्भक प्रभावित घाव को उपचारित करने के लिए कीटनाशक औषधियों का प्रयोग कर डिम्भकों को नष्ट करना आवश्यक है। आमतौर पर यह कार्य स्वयं हाथों से या कीटनाशकों (बी.एच.सी.) आदि के 2 से 3 प्रतिशत वाले घोल को घाव पर डालकर किया जा सकता है। डिम्भकों से मुक्त घाव को टिंक्चर आयोडीन से उपचारित कर पट्टी बांधकर रखना चाहिए।

दिनेश कुमार शर्मा, सौविक पॉल एवं नीतिका शर्मा

नस्ल सुधार के लिए बकरों का चयन

अच्छे नस्ल का बकरा आधे रेवड़ के बराबर होता है। चयनित एवं अच्छे नस्ल के बकरे के वीर्य का उपयोग कर बकरी उत्पादन में अधिक वृद्धि की जा सकती है। वर्तमान में भारत देश में बकरियों की संख्या दिनों-दिन बढ़ती जा रही है जिसकी सन् 2050 तक लगभग 21.6 करोड़ होने की सम्भावना है। बकरी एक बहुपयोगी पशु है, जो भूमिहीनों, लघु एवं सीमान्त किसानों की अर्थव्यवस्था तथा पोषण में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। खाद्य आपूर्ति को सुचारू रूप से बनाए रखने के लिए बकरी पालन का विशेष महत्त्व है। बकरियों का योगदान मानव खाद्य श्रृंखला में दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। अपने देश में बकरियों की संख्या 15.40 करोड़ है जो लगभग 7 करोड़ किसानों की आजीविका का मुख्य साधन है। बकरी पालन का व्यवसाय भारत के 5 लाख गाँवों तक फैल चुका है।

बकरों के चयन के चार विभिन्न तरीके हैं :

1. प्रारूप अथवा बाह्य रचना।
2. सम्बन्धियों की उत्पादन क्षमता व स्वयं की उत्पादन शक्ति।
3. संतति परीक्षण।
4. वंशावली।

1. प्रारूप अथवा बाह्य रचना – पशुओं के चुनने की यह परम्परागत रीति रही है। एक उत्तम बकरा आधे रेवड़ के बराबर होता है । यह पुरानी लोकोक्ति यहाँ भी उतनी ही महत्व रखती हैं, क्योंकि निश्कृत बकरा रेवड़ के गुणों की गिरावट का कारण होता है। एक बकरा, जो प्रजनन के लिए रखना है, आकर्षक, स्वस्थ, प्रभावशाली, उत्तेजक, डील-डौल वाला, छोटे खुरों व टखनों तथा नर्म त्वचा वाला होना चाहिए।

2. सम्बन्धियों व स्वयं की उत्पादन शक्ति के आधार पर – बकरी पालक का बकरों का चयन व वरण का मुख्य उद्देश्य उत्तम बकरा खरीदना अथवा अपने रेवड़ में से अच्छे बकरों को भविष्य के लिए

बचाना तथा बचे हुए पशुओं की छंटनी करना है। इस प्रकार उसका उद्देश्य अपने रेवड़ की तीव्र गति से आनुवंशिक वृद्धि करना है। बकरी प्रजनन का मुख्य ध्येय पशु में ऐसे समूहों की वृद्धि करना है जो कि विशेष वातावरण तथा आर्थिक स्थिति में अधिकतम लाभ दे सकें।

3. संतति परीक्षण – प्रजनन हेतु बकरों का चयन संतति परीक्षण द्वारा करना ही सर्वोत्तम विधि है। यह विधि विशेषकर ऐसे विशेषणों के लिए अधिक उपयुक्त है जो केवल एक ही लिंग के पशुओं में प्रदर्शित होती है। जनक परीक्षण के लिए 5-10 संतति की उत्पादन क्षमता की उनकी माँ की उत्पादन क्षमता से तुलना करते हैं। यदि सतंति की उत्पादन क्षमता माँ से बढ़ जाती है तो जनक को परीक्षित माना जाता है।

4. वंशावली के आधार पर चयन – वंशावली पर आधारित नर वही चुने जाए जिनकी प्रजनक क्षमता प्रमाणिक हो, जो ऐसी मादाओं से पैदा हुए हों जो स्वयं तथा जिनकी वंशावली अधिक दूध, ऊन व मांस उत्पादन में प्रसिद्ध हो। वंशावली का पता करते समय यह अवश्य देख लेना चाहिए कि केवल उत्तम सबलता वाला नर ही संतति परीक्षण के लिए चुना जाए।

रवि रंजन एवं चेतना गंगवार

यह भी जानें

बकरी एक अत्यन्त बुद्धिमान पशु है। वह वास्तव में बहुत ही संयमित, कोतुहुली एवं किसी ऊँचे स्थान पर अपनी चढ़ने की योग्यता एवं संतुलन के लिए जानी जाती है। बकरी एक अकेला रूमन्थी पशु है जो पेड़ों पर आसानी से चढ़ सकता है परन्तु पेड़ को इसके लिए थोड़ा कोणीय होना चाहिए। अपनी चंचलता एवं अन्वेशी आदत के कारण वह अपने बाड़े को छोड़कर भागने के लिए प्रसिद्ध है। निकल भागने के लिए वह जान बूझकर बाड़े को नीचे या ऊपर कर, धक्का देकर पहले जांच करती है और थोड़ी सी भी गुंजाइश पाने पर निकल भागती हैं । अन्य दूसरी बकरियाँ शीघ्र सीख कर उसका अनुसरण करती हैं। बकरियों में भेड़ों की तरह झुण्ड बनाने की आदत नहीं होती। आगन्तुक के आने पर वह उसका सामना करती है और बकरे तो अपने पैरों से उस पर वार भी कर सकते हैं।

कृषि परिवर्तन यात्रा

राष्ट्रीय कृषि नवोन्मेषी परियोजना अन्तर्गत आयोजित कृषि परिवर्तन यात्रा का 17 मई, 2014 को संस्थान प्रांगण में स्वागत किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित डा. ए.सी. वार्ष्णेय, उपकुलपति दुवासु, मथुरा ने संस्थान निदेशक, डा. एस.के. अग्रवाल एवं डा. आर.पी. मिश्र, प्रशिक्षण समन्वयक (एन.ए.आई.पी.) नई दिल्ली की उपस्थिति में यात्री किसानों का जोरदार स्वागत किया। डा. एम.के. बारिक, प्रधान वैज्ञानिक, सीफा, भुवनेश्वर एवं मुख्य समन्वयक कृषि परिवर्तन यात्रा के साथ डा. पुनीत कुमार, आई.वी. आर.आई. विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थे। ज्ञात हो कि इस यात्रा में भारत के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों के कुल 34 सफल किसानों/उद्यमियों ने भागीदारी की थी। यह सभी सफल किसान राष्ट्रीय कृषि नवोन्मेषी कार्यक्रम की विभिन्न परियोजनाओं के सफलतम लाभार्थी थे जिन्होंने कृषि की वैज्ञानिक तकनीकियों का प्रयोग कृषि व्यापार के विकास में किया था। इस यात्रा का उद्देश्य वास्तव में इन सफल किसानों की सफलता की कहानियों को संदेश के रूप में समस्त भारत के किसानों तक पहुंचाकर परियोजना अन्तर्गत नवविकसित तकनीकियों को फैलाना एवं किसानों को अपनाने हेतु प्रेरित करना था।

यह यात्रा दिनांक 10 मई, 2014 को हैदराबाद से प्रारम्भ होकर नागपुर, भोपाल से होते हुए मथुरा पहुंची थी। समारोह के मुख्य अतिथि डा. वार्ष्णेय ने यात्रियों के सफलतापूर्वक किए गए वैज्ञानिक प्रयासों से प्राप्त अनुभवों के प्रसंगों की चर्चा करते हुए उनकी प्रशंसा की। यात्री किसानों ने भी समारोह में उपस्थित स्थानीय किसानों के साथ अपने अनुभवों को बांटा। संस्थान निदेशक डा. एस.के. अग्रवाल ने किसानों की कृषि समस्याओं को उजागर करते हुए पारस्परिक तालमेल एवं समन्वयन के द्वारा त्वरित सहायता प्रदायक तंत्र को विकसित करने पर बल दिया। यात्रा आयोजन पर स्थानीय किसानों ने अपनी अभिरूचि प्रकट की और कहा कि इस तरह की यात्राओं का आयोजन अति आवश्यक है और किसानों के लिए प्रेरणा का कार्य करता है। इस समारोह में कुल 40 से अधिक स्थानीय प्रगतिशील किसानों ने भागीदारी की। जिनमें महिलाऐं एवं पुरूष दोनों ही शामिल थे। समारोह में एक सत्र किसान-वैज्ञानिक वार्ता का आयोजित किया गया, जिसमें यात्रियों एवं किसानों की समस्याओं का निराकरण किया गया। परिवर्तन यात्रा समारोह को सफल बनाने में महिला समाख्या मथुरा नामक गैर सरकारी संस्था का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

सेवा निवृति

1. दिनांक 31 जनवरी, 2014 को कृषि प्रक्षेत्र अनुभाग में कार्यरत श्री भगवान सिंह, तकनीकी अधिकारी (टी-7) एवं प्रसार शिक्षा एवं सामाजिक अर्थशास्त्र अनुभाग में कार्यरत श्री दिनेश प्रसाद, तकनीकी अधिकारी (टी-6) ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की लम्बी अवधि की अपनी सेवाओं बाद सेवा निवृत्ति प्राप्त की। इस अवसर पर आयोजित समारोह में संस्थान के कार्यकारी निदेशक डा. सतीश कुमार जिन्दल ने माल्यार्पण कर समस्त संस्थान वैज्ञानिकों, कर्मचारियों की उपस्थिति में उनके कार्यो की भूरि-भूरि प्रशंसा की और भावभीनी विदाई देते हुए उनके सुखद भविष्य की कामना की।
2. दिनांक 1 अप्रैल, 2014 को संस्थान में आयोजित एक समारोह में श्री महावीर प्रसाद अग्रवाल (टी-5), श्री जगदीश सिंह (टी-5) एवं श्री सोरन सिंह को उनकी सफल सेवाओं की समाप्ति पर भावभीनी विदाई दी गई। इस समारोह में संस्थान निदेशक डा. सुधीर कुमार अग्रवाल ने इन सभी सेवानिवृत कर्मचारियों के कार्यो का संक्षिप्त विवरण देते हुए भूरि-भूरि प्रशंसा की। उपस्थित वैज्ञानिकों एवं अन्य कर्मचारियों ने भी सेवा निवृत कर्मियों के कार्यो की सराहना करते हुए उनके सुखद भविष्य एवं उत्तम स्वास्थ्य की कामना कर उन्हें विदाई दी।

कृषि वानिकी: बकरी पालन हेतु समर्थ चारा स्रोत

जनसंख्या के बढ़ते दबाव के कारण, और अधिक कृषि योग्य भूमि चारा उत्पादन के अन्तर्गत लाना सम्भव नहीं है। अत: ऐसी भूमि, जो कि कृषि फसलों (खाद्यान्न) के लिए अनुकूल नहीं हैं, का कृषि वानिकी के द्वारा चारा उत्पादन में प्रयोग किया जा सकता है। फली व पत्ती वाले चारा वृक्षों से तथा घास, दलहन या परम्परागत चारा फसलें वृक्षों की पंक्ति के मध्य उगाकर प्राप्त कर सकते हैं। समस्याग्रस्त भूमि को कृषि वानिकी में विकसित किया जा सकता है।

कम वर्षा वाले क्षेत्रों में सेवन, अंजना घास इत्यादि को लगाया जा सकता है तथा देशी बबूल, अरडू, खेजड़ी, बेर आदि के वृक्ष लगाये जा सकते हैं। इन वृक्षों से पत्तियाँ व फलियाँ बकरियों के लिए उन महीनों में प्राप्त होते हैं जब हरे चारे की कमी होती है। उन स्थानों पर जहाँ सिंचाई के पानी की उपलब्धता हो सकती है वहाँ पर सुबबूल, शहतूत से अच्छी किस्म का पत्ती चारा प्राप्त होता है तथा वृक्षों की पंक्तियों के मध्य गिनी घास, नेपियर, दीनानाथ घास आदि बहुवर्षीय घासों को सफलतापूर्वक उगाकर कई बार काटा जा सकता है। इसके अलावा परम्परागत दलहन चारा जैसे लोबिया, ग्वार, ढैंचा, सेम आदि को भी बिना किसी समस्या के उगाया जा सकता है।

कृषि वानिकी के अन्तर्गत बड़े वृक्षों को भी उगाया जा सकता है। परन्तु इनकी वृद्धि धीमी गति से होती है। अत: इनसे पत्ती चारा प्राप्त करने के लिए 3–10 वर्ष का समय लगता है। इनमें से कुछ वृक्षों की लकड़ी को इमारती लकड़ी के रूप में अच्छा माना जाता है। बड़े वृक्षों में पीपल, बरगद, नीम, गूलर, पाकर, जामुन आदि प्रमुख हैं। बड़े वृक्षों की आपस में दूरी भी अधिक रखते हैं जिससे कि उनकी

बढ़वार ठीक प्रकार से हो सके। कृषि वानिकी के अन्तर्गत वृक्षों के पौधे लगाने के लिए ग्रीष्म ऋतु में गढ़ढे खोद लेना चाहिए तथा मध्यम आकार के वृक्षों के लिए 5–5 मीटर दूरी पर्याप्त रहती है। परन्तु बड़े वृक्षों के लिए 10–10 मीटर तक दूरी रख सकते हैं।

ऐसी जगहों पर जहाँ सिंचाई के साधन उपलब्ध नहीं हैं तथा भूमि ऊबड़ खावड़ हैं वहाँ वर्षा ऋतु में बहुवर्षीय घासों व दलहनों के बीज चरागाह विकसित करने हेतु छिड़क कर बिखेरने से जमाव हो जाता है। चरागाह का प्रयोग द्वितीय वर्ष से करना चाहिए। प्रथम वर्ष में चरागाह से घास व दलहनों को काट कर ही खिलाना चाहिए। चरागाह में पशुओं को चराने से पहले वृक्षों के पौधों को किसी प्रकार की बाड़ लगाकर सुरक्षित कर देना चाहिए। चरागाह के लम्बे समय तक उपयोग करने के लिए चक्रीय क्रम में चराई अपनानी चाहिए जिससे कि चरागाह की पुनर्वृद्धि समुचित हो सके।

रवीन्द्र कुमार, प्रभात त्रिपाठी, यू.बी. चौधरी एवं मनोज त्रिपाठी

उप महानिदेशक (पशु विज्ञान) का भ्रमण

डा. कृष्ण मुरारी लाल पाठक, उप महानिदेशक (पशु विज्ञान), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली ने 05 अप्रैल, 2014 को संस्थान का दौरा किया। इस दौरे में डा. पाठक ने संस्थान के विभिन्न पशु प्रक्षेत्रों का भ्रमण कर पशु स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी प्राप्त की और प्रक्षेत्र प्रभारी वैज्ञानिकों से विभिन्न विषयों से सम्बन्धित चर्चा की। बाद में डा. पाठक ने संस्थान के समस्त वैज्ञानिकों, तकनीकी एवं प्रशासनिक अधिकारियों के साथ बैठक की और उनकी परेशानियों एवं शिकायतों का व्यक्तिगत रूप से संज्ञान लेकर शीघ्रताशीघ्र निराकरण हेतु निर्देश दिए। बैठक में उन्होंने वैज्ञानिकों को उत्कृष्ट शोध कार्यों के लिए प्रेरित किया।

सफलता की कहानी

मोहम्मद लाल खाँ निवासी–बरई मानपुर बाँदा, उत्तर प्रदेश के निवासी हैं और विज्ञान से स्नातक होने के बावजूद कृषि कार्यो में रूचि रखते हैं। आपने वर्ष 2011 में केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मखदूम से व्यवसायिक बकरी पालन प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद जिला कॉ–आपरेटिव बैंक एवं नावार्ड के सहयोग से बकरी पालन प्रारम्भ किया। प्रारम्भिक पशु रोग सम्बन्धी समस्याओं के कारण इस व्यवसाय में उन्होने कुछ आर्थिक हानि भी उठाई। परन्तु उन्होंने हार नहीं मानी। संस्थान वैज्ञानिकों के लगातार तकनीकी सहयोग से उन्होंने अपने बकरी व्यवसाय को पुर्नस्थापित किया और लाभ कमाया। इस व्यवसाय में उन्हें यूनाइटेड इण्डिया इंश्योरेन्स का भी सहयोग मिला। वर्तमान में भी लाल खाँ के पास 200 से अधिक संख्या में बकरियाँ हैं और वह इस व्यवसाय को बुलन्दियों पर ले जाना चाहते हैं । श्री लाल खॉ बकरी पालन के साथ–साथ कृषि सम्बन्धी क्रियाकलापों में तिल, मूँग, चना एवं अरहर जैसी फसलों का उत्पादन भी करते हैं। बकरी पालन में अपनी सफलता का श्रेय श्री लाल खाँ केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान एवं संस्थान के वैज्ञानिकों के तकनीकी सहयोग को देते हैं। बकरी पालन एवं कृषि में उनके उत्कृष्ट

कार्यो का संज्ञान लेते हुए दिसम्बर 2012 में आपको चौधरी चरण सिंह किसान समारोह में जिला अधिकारी बाँदा द्वारा रू. 3500/– का चेक एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान कर प्रगतिशील किसान के रूप में सम्मानित किया। 16 फरवरी 2014 को पंजाब के मुख्यमंत्री, माननीय प्रकाश सिंह बादल द्वारा उन्हें रूपये 51,000/– का चेक एवं शील्ड प्रदान कर सम्मानित किया गया। श्री लाल खाँ के बकरी पालन के सार्थक प्रयत्नों के लिए केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान ने उन्हें प्रगतिशील बकरी पालक के रूप में 27 अप्रैल, 2000 को **'इनोवेटर डे'** के आयोजन पर सम्मानित किया।

भ्रमण

वर्ल्ड कांग्रेस ऑन एग्रोफोरेस्ट्री 2014 का आयोजन 10–14 फरवरी, 2014 नई दिल्ली में किया गया। आयोजन समिति द्वारा संस्थान के कृषि प्रक्षेत्र पर विकसित कृषि वानिकी के विभिन्न प्रारूपों का चयन वर्ल्ड कांग्रेस के विभिन्न देशों के प्रतिभागियों के अवलोकन हेतु किया गया तथा विभिन्न देशों के प्रतिभागियों द्वारा संस्थान में शहतूत, बेर, नीम, अरडू तथा औषधीय पादप आधारित कृषि वानिकी के प्रारूपों का भ्रमण व अवलोकन किया गया। प्रतिभागियों को संस्थान का परिचय डा. एस.के. जिन्दल, प्रधान वैज्ञानिक व विभागाध्यक्ष, दैहिकी जनन एवं आवास प्रबन्धन द्वारा कराया गया।

यू.बी. चौधरी व प्रभात त्रिपाठी

प्रशिक्षण / कार्यशाला / संगोष्ठी

नोडल अधिकारियों का प्रशिक्षण

उत्तर प्रदेश सोडीय भूमि सुधार योजना के घटक 3 के नोडल अधिकारियों (पशु चिकित्सक) के लिए दो पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम दिनांक 17–21 जून एवं 24–28 जून, 2014 को आयोजित किये गये। उपरोक्त कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश राज्य के 28 जिलों (भूमि सुधार योजना लागू) के नोडल अधिकारियों ने भाग लिया। प्रशिक्षणार्थियों को बकरी पालन में हुए नए अनुसंधान एवं उनकी आवश्यकता अनुरूप जानकारी प्रदान की गई। प्रशिक्षण कार्यक्रम में सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक दोनों पक्षों का समायोजन था।

इस दौरान बकरी प्रबन्धन, पोषण, नस्ल सुधार, स्वास्थ्य प्रबन्धन एवं आर्थिकी इत्यादि बिन्दुओं पर विस्तार पूर्वक चर्चा की गई। प्रशिक्षण के उपरान्त सभी प्रशिक्षणार्थियों ने संस्थान को धन्यवाद ज्ञापित किया। संस्थान के निदेशक डा. एस.के. अग्रवाल ने प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित किए। इस कार्यक्रम के समन्वयक डा. अशोक कुमार एवं डा. पी.के. राउत थे। प्रशिक्षण सह समन्वयक डा. विवेक कुमार गुप्ता, डा. विजय कुमार एवं डा. विनय चतुर्वेदी थे।

विजय कुमार

अखिल भारतीय समन्यक बकरी विकास परियोजना बैठक

12 फरवरी, 2014 को संस्थान मध्य अखिल भारतीय समन्वयित बकरी विकास परियोजना की एक बैठक संस्थान निदेशक डा. सुधीर कुमार अग्रवाल की अध्यक्षता में आयोजित हुई। इस बैठक में जोनल परियोजना निदेशक, कानपुर डा. एस. के. सिंह एवं जोनल परियोजना निदेशक जोधपुर डा. वाई वी. सिंह के साथ उत्तर प्रदेश और राजस्थान राज्यों के कृषि विकास केन्द्रों के प्रभारियों ने भागीदारी की। बैठक में संस्थान एवं विभिन्न कृषि विकास केन्द्रों के बकरी विकास कार्यक्रमों में पारस्परिक सहयोग एवं समन्वयन पर जोर दिया गया। अपने अध्यक्षीय अभिभाषण में डा. अग्रवाल ने कहा कि उत्तर प्रदेश एवं राजस्थान भारत के सर्वाधिक बकरी संख्या वाले राज्य हैं और सिरोही, बरबरी, मारवाड़ी, जखराना और जमुनापारी जैसी प्रसिद्ध बकरी नस्ल इन प्रदेशों में पाई जाती हैं अतः इन राज्यों में संस्थान के बकरी शोध और उनके विकास कार्यो में तालमेल निश्चित ही किसानों को लाभदायक होगा। उन्होंने बकरी एवं कृषक के विकास के लिए सहकारी समितियों के विकास पर जोर दिया। डा. वाई.वी. सिंह ने समन्वयित कृषि तंत्र में बकरी के महत्व के ऊपर प्रकाश डालते हुए भेड़ एवं बकरियों की समस्याओं के निराकरण हेतु भा.कृ.अ.प. के संस्थानों की भूमिका की सराहना की। बैठक में संस्थान के सभी वैज्ञानिकों ने भागीदारी कर विचार विमर्श किया।

दुधारू बकरी की नई नस्ल : बत्तीसी

भारतवर्ष के विभिन्न भू-भागों में वहां की जलवायु एवं आवश्यकता के अनुरूप बकरियों की 25 नस्लों का उदय एवं विकास हुआ है। पश्चिमी उत्तर भारत की बकरियों की नस्लों की दुग्ध उत्पादन क्षमता एवं आकार भारत के अन्य क्षेत्रों की बकरियों की अपेक्षा अधिक है। उपरोक्त नस्लों को बकरीपालकों ने संकरण एवं चुनाव द्वारा सदियों में विकसित किया है। इसी कड़ी में राजस्थान के बकरी पालकों ने एक ऐसी बकरी नस्ल के विकास की आवश्यकता महसूस की जिसकी दूध देने की क्षमता एवं दुग्धकाल अच्छा हो साथ ही जंगल में घास/झाड़ियों आदि को चरने की योग्यता, चरने के लिये लम्बी दूरी तक यात्रा करने की क्षमता एवं क्षेत्र के अर्धशुष्क एवं शुष्क वातावरण की कठोरता को सहने की शक्ति भी हो। अरावली पर्वत श्रृंखला के क्षेत्रों में जिसमें राजस्थान एवं हरियाणा राज्य प्रमुख रूप से आते हैं, बकरियों की उन्नत नस्लें जैसे सिरोही एवं जखराना पाई जाती हैं। राजस्थान के अलवर जिले में पाई जाने वाली जखराना नस्ल एक दुधारू नस्ल की बकरी है। बकरीपालक सिरोही नस्ल को भी उसकी उत्कृष्ट चराई योग्यता, शरीर सौष्ठव एवं दूध-मांस के अच्छे उत्पादन के लिए पालते हैं साथ ही अलवर, डीग, भरतपुर (राजस्थान) क्षेत्र के बकरीपालक उत्तर प्रदेश की दुधारू नस्ल की बकरी जमुनापारी को भी पसन्द करते हैं किसानों के रेबड़ में इन्हीं तीन नस्ल की बकरियों के जानवर पाये जाते हैं। बकरीपालकों के द्वारा इन्हीं तीन नस्लों के मिश्रण से बत्तीसी बकरी का विकास हुआ है। बतीसी नस्ल की बकरी में जमुनापारी एवं जखराना जैसा दुधारूपन है तथा शरीर सौष्ठव सिरोही के अनुरूप। अत: उच्च उत्पादन क्षमता के कारण इसे अन्य नस्लों की अपेक्षा काफी अच्छे दाम मिलते हैं। इस प्रजाति की बकरियाँ उ.प्र. के मथुरा जिले के कोसी एवं गोवर्धन क्षेत्र में भी बड़ी संख्या में बढ़ रही हैं।

शारीरिक गुण : बत्तीसी बकरी मुख्यत: मिश्रित रंगों वाली नस्ल हैं, इसके शरीर पर सफेद रंग के काले या भूरे रंग के धब्बे (मुंह, छाती, पेट व टांगों पर) पाये जाते हैं। यह मध्यम कद (65-85 से.मी.) की बकरी है जिसकी नाक जमुनापारी के अनुरूप बीच से उठी हुई (रोमन) तथा कान मध्यम आकार के (15-20 से.मी.) लटकते हुए होते हैं। इसके थन (अयन) बड़े आकार के तथा शंक्वाकार होते हैं। इनके शरीर पर छोटे बाल होते हैं किन्तु गर्दन व टांगों पर बाल जमुनापारी के अनुरूप थोड़े बड़े तथा सघन होते हैं।

जलवायु अनुकूलन : बत्तीसी बकरी का प्रजनन क्षेत्र राजस्थान राज्य का अर्ध-शुष्क/शुष्क तथा पठारी इलाका है। इस क्षेत्र के गोचर में खाद्य पदार्थों तथा पानी की विशेष कमी है। इस क्षेत्र में ज्यादातर हिस्सों में बरानी खेती का प्रचलन है। ऐसी स्थिति में बड़े पशुओं का पालन न केवल काफी खर्चीला बल्कि चुनौती भरा होता हैं। इस तरह की परिस्थिति में बकरी पालन एक अच्छा वैकल्पिक व्यवसाय है। बत्तीसी बकरी प्रतिकूल जलवायु में विकसित एक ऐसी नस्ल है जोकि तमाम अभावों एवं प्रतिकूलता के बावजूद अच्छा उत्पादन करने में सक्षम है। इस नस्ल का वैज्ञानिक रूप से विस्तृत मूल्यांकन करते हुए विकास आवश्यक है।

तलिका 1: बत्तीसी बकरी के उत्पादन एवं जनन संबंधी लक्षण :

प्रथम प्रसव उम्र	18-20 माह
दो ब्यांत का अन्तराल	एक वर्ष
बहुप्रसवता (जुड़वा बच्चे देने की दर)	50 प्रतिशत
नर शरीर भार (6 माह पर)	16 कि.ग्रा.
मादा शरीर भार (6 माह पर)	13 कि.ग्रा.
नर शरीर भार (12 माह पर)	30 कि.ग्रा.
मादा शरीर भार (12 माह पर)	25 कि.ग्रा.
वयस्क नर का शरीर भार (2 वर्ष पर)	50 कि.ग्रा.
वयस्क मादा का शरीर भार (2 वर्ष पर)	38 कि.ग्रा.
प्रतिदिन औसत दूध	1.5 लीटर
दुग्ध काल	200 दिन

बत्तीसी बकरियाँ का सामाजिक एवं आर्थिक पक्ष : बत्तीसी बकरियाँ रखने वाले किसानों के पास अच्छी संख्या में बकरियाँ हैं तथा उनके रेबड़ का आकार 10-50 बकरी तक होता है। अच्छा दूध एवं मांस उत्पादन देने के कारण इसका विपणन मूल्य रूपये 6000-10000 प्रति बकरी तथा नर का रूपये 8000-15000 तक है। अलवर क्षेत्र में बत्तीसी नस्ल के बकरे ईद के समय काफी लोकप्रिय हैं तथा काफी ऊंचे दामों पर बिकते हैं। इस नस्ल की 20-25 बकरियों का रेबड़ रखने वाला बकरीपालक आसानी से एक से डेढ़ लाख रूपये वार्षिक आमदनी कर लेता है जोकि अपने घर का खर्च एवं खाद्य आवश्यकता एवं आकस्मिक खर्चों के लिए आवश्यक होती हैं । सूखे क्षेत्र में पाई जाने वाली बकरी की यह संकर नस्ल गरीब ग्रामीणों के लिये एक ऐसी पूंजी है जोकि ए.टी.एम. की तरह काम करती है तथा किसान के प्रतिकूल परिस्थितियों में जीने का एक सबल साधन है।

बत्तीसी बकरी भविष्य में उत्तम दुधारू बकरी की नस्ल के रूप में अपार सम्भावनायें लिये हुए हैं। इसका विभिन्न खाद्य प्रबन्धन पद्धतियों में उत्पादकता एवं वातावरण सहिष्णुता परीक्षण किये जाने आवश्यकता है। परीक्षणों में सफल पाये जाने पर इसका संरक्षण एवं प्रवर्धन करके इसे देश के सूखाग्रस्त इलाकों के किसानों में वितरित भी किया जा सकता है। यह नस्ल महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश एवं मध्य प्रदेश के सूखे इलाकों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकती है। अत: बत्तीसी नस्ल की बकरियों को प्रयोग के तौर पर उपरोक्त क्षेत्रों में परीक्षण किए जाने की आवश्यकता है।

मनोज कुमार सिंह, महेश शिवानंद दिगे एवं अनुपम कृष्ण दीक्षित

बकरी की अदम्य उत्पादन क्षमता का पूर्णरूपेण उपयोग करें वैज्ञानिक

डा. एस. अय्यपन, महानिदेशक भा.कृ.अ.प.

दिनांक 6 अप्रैल, 2014 को आयोजित एक भव्य समारोह में महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद एवं सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग, भारत सरकार, डा. एस. अय्यप्पन ने केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान के नवनिर्मित ब्लॉक–सी का लोकार्पण किया। इस अवसर पर बोलते हुए डा. अय्यप्पन ने बकरी एवं भारत के गरीब बकरी पालकों के विकास के लिए संस्थान द्वारा किए गए कार्यो की सराहना की। उन्होने कहा कि संस्थान में विकसित विभिन्न तकनीकियाँ किसानोपयोगी हैं और निश्चित रूप से उनके आर्थिक विकास को संबल प्रदान करेगी। डा. अय्यप्पन ने बकरी को भविष्य का पशु बताते हुए कहा कि भारत की बढ़ती जनसंख्या के लिए पशु प्रोटीन के अच्छे स्रोत के रूप में बकरी को देखा जाना चाहिए।

संस्थान वैज्ञानिकों को प्रेरित करते हुए डा. अय्यप्पन ने कहा कि बकरी की अदम्य उत्पादन क्षमता का पूर्णरूपेण उपयोग हम नहीं कर पाए हैं। इस दिशा में विशेष अनुसंधान की आवश्यकता है ताकि इस पशु का पूर्ण रूपेण लाभ हमारे किसानों को मिल सके। इस अवसर पर उप महानिदेशक भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (पशु पालन) डा. कृष्ण मुरारी लाल पाठक ने वैज्ञानिकों को उनके उत्तम शोध के लिए परिषद की ओर से पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। उन्होने कहा कि मैं आशा करता हूँ कि प्रयोगशाला का नवनिर्मित भवन संस्थान में शोध की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा कर संगठनात्मक ढांचे को मजबूत करेगा। इस अवसर पर संस्थान प्रभारी एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक निदेशक डा. बी.एस. प्रकाश ने वैज्ञानिकों का ध्यान परिवर्तनशील वातावरण के पशु स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव की ओर आकर्षित किया और कहा कि पशु उत्पादन को कालानुकूल बनाने के लिए इस दिशा में शोध करने की आवश्यकता है।

समारोह में डा. ए.सी. वार्ष्णेय, उपकुलपति, दुवासु, मथुरा, डा. धीरज कुमार, निदेशक, निदेशालय सरसों अनुसंधान, भरतपुर, डा. एस.के. दुबे प्रभारी, सी.एस. डब्ल्यू,सी.आई.आर.टी., छलेसर एवं अधिष्ठाता दुवासु मथुरा डा. एस. के. गर्ग, भी उपस्थित थे। समारोह के प्रारम्भ में डा. एस.के. अग्रवाल, निदेशक, संस्थान ने संस्थान की उपलब्धियों का विवरण देते हुए भारत में बकरी विकास के लिए एक प्रारूप प्रस्तुत किया।

केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान

मखदूम, फरह 281 122, मथुरा (उ.प्र.) भारत
दूरभाष न.: 0565–2763380, फैक्स न.: 0565–2763246
ई–मेलः director@cirg.res.in,
बेबसाइटः http:// cirg.res.in
हेल्पलाइन न.: 0565–2763320

निदेशक, केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मखदूम, फरह, मथुरा (उ.प्र.) द्वारा प्रकाशित एवं विजय प्रिंटिंग प्रेस, मथुरा, दूरभाष : 09412279156 द्वारा मुद्रित